# "रूहें लगाइयाँ अपने सरूप में"

प्यारे सुन्दरसाथ जी जिस पारब्रह्म के गुझ खिलवत की सुध अक्षर ब्रह्म को नहीं तो फिर त्रिदेवा और त्रिदेवा द्वारा बनाये गये दुनियां के जीवों को उस पारब्रह्म की सुध कहाँ से हो सकती है परन्तु उस अक्षरातीत ने अपने मोमिनों पर इतनी मेहर की है कि नासूती तनों में जो जीव है उन जीवों पर जो ब्रह्मसृष्टियों की नजर पड़ी है उन तनों को श्री राजी महाराज ने दुनियां के कर्मकाण्डों से छुड़ाकर देवी-देवताओं पर आस्था से छुड़ाकर स्वयं अपने इलम-लदुन्नी, अखण्ड, वाणी द्वारा अपने स्वरूप की, अपने घर की, लीला की पहचान करवाई है।

परमधाम में जिन नजरों से हम इश्क के प्याले पीते थे, उस दिल में जब रूहों को अपनी साहेबी दिखाने के लिए खेल को ले लिया तो उन नजरों से हम खेल देखने लगे। यधपि हम परमधाम में चरणों तले बैठी है पर खेल देखते-देखते अपने घर को, धनी को भूल गये। ऐसा अनुभव होने लगा कि हम श्री राजी से जुदा हो गए तब श्री इन्द्रावती की आतम ने इस प्रकार पुकार के कहा-

क्यों दियो रे बिछोहा दूल्हा, छूटी अर्स खिलवत।
हम अरवाहें जो अर्स की, फेर कब देखे हक सूरत।।

परमधाम में किये अपने वायदे के मुताबिक धनी भी स्वंय रसूल बनकर आये और कुरान में अपनी और रूहों के आने की गवाहियाँ लिखवाई। फिर बड़ी रूह श्यामा जी की गवाहियाँ लिखवाई। फिर बड़ी रूह श्यामा महारानी को भेजा और उन्होने ३१३ आत्माओं को जगाया। बिना इलम के वे सब रूहें माया में फिर से भूल गई तो जो अखण्ड ज्ञान आज तक दुनियां में आया नहीं था स्वयं श्री राजी महाराज अपनी रूहों के लिये लेकर आये। जिसमे अपने स्वरूप, हकीकत, वाहेदत और मारफत की वो न्यामतें लुटा दी जिसकी सुध परमधाम में भी नहीं थी। जैसा कि वाणी में भी फुरमाया है:-

रूहें लगाइयाँ अपने सरूप में, और भी अपनी सिफत।
दिल अर्स मोमिन लीजियो, कहे रूह मता हुकमें महामत।। परिक्रमा प्रकाश ३।

उस अर्श अजीम में उस सरूप का किसी ने भी आज दिन तक वर्णन नहीं किया था कि वह किशोर इश्कमयी, नूरी सरूप कैसा है ? सबसे पहले मोहम्मद साहब ने मेयराज मे उस सरूप के दीदार किये पर वह भी उस सरूप का वर्णन नहीं कर सके। बेसबी-बेनिमून कहकर छोड़ दिया। स्वयं अक्षरातीत ने ही उस सरूप का वर्णन श्री मुखवाणी कुलजम स्वरूप में किया



Nijanand App

क्योंकि खुदा की सूरत का वर्णन खुदा के बिना कोई कर ही नहीं सकता अः सागर, सिनगार किताब में अपने सरूप का नख से शिख तक वर्णन किया ताकि माया में भूली रूहों को मेरे सरूप की याद आ जाये। मेरी रूहें इधर-उधर भटके नहीं, वाणी द्वारा मेरी सुरत को दिल में बसा कर उसी में मग्न रहें।

अरवाह आशिक जो अर्स की, ताकी हिरदे हक सूरत।
निमख न न्यारी हो सके, मेहबूब की मूरत।।

श्री जी ने कहा है कि :

सुरता एक राखिये, मूल-मिलावै माहे।

अतः परमधाम में पाँचवी गोल हवेली में जहाँ हमारी बैठक है हमारी सुरता लगनी चाहिए। धनी ने तो वाणी से बेशक करके माया के सब फन्दों से हटाकर अपने चरणो में लगाया है -

रूहें आइयां अर्स अजीम से, दई नुकते इलम जगाए।
और उमेदां सब छुडाए के, हकें आप में लइयाँ लगाएँ।।

जिसकी सिफत सारी दुनियां गा रही थी उनकी साहेबी की पहचान वाणी द्वारा हमें मिली है। उस बुजरकी और साहेबी को कौन समझेगा कौन जानेगा ? जिनके दिल में श्री राज जी की बैठक है, जिनका सम्बन्ध श्री राजजी से है यह सारी न्यामते धनी हमारे लिए ही लाए हैं।

उनके सरूप की पहचान करके भी यदि हम इधर-उधर भटकते है तो हमारे लिए बड़े शर्म की बात है क्योंकि अब धनी ने कोई बात भी हमसे छिपा कर नहीं रखी है जिसकी हमें सुध न हो। ज्ञान का पूर्ण सूर्य उदय हो चुका है। खिलवत, वाहेदत्त और मारफत धनी ने ही वाणी में जाहिर कर दी क्योंकि वह पूर्ण है अतः यह सारी शोभा, बुजरकी उन्हीं की है और उनके बिना ये शोभा ये बुजरकी कोई भी किसी और को देता है तो वह पारब्रह्म से बहुत दूर है। श्री राजी महाराज स्वयं मेहराज के तन में इन्द्रावती की आतम में आकर विराजमान हुए। जो अखण्ड वाणी आत्माओं के लिए उतारी, उसकी सारी शोभा इन्द्रावती की आतम को दी इन्द्रावती के अर्श दिल में आकर उसके बेशक इलम की न्यामते दी, पिछले कारण एह वाणी कही :-

उसी वाणी के गुझ भेदो को खोलकर सरकार श्री ने भूली आत्माओ को पारब्रह्म की पहचान करवाई, अपना वजूद छोड़ने से पहले अपनी सुरता परमधाम में लगा ली। सुन्दरसाथ को भी चितवन द्वारा परमधाम के जर्रे-जर्रे की पहचान कराकर मूल-मिलावे में बैठे श्री युगल स्वरूप के चरणों में ध्यान लगाने की हिदायत दी। अतः सुन्दर साथ जी अब श्री इन्द्रावती जी और सरकार श्री द्वारा बताये मार्ग पर चलकर हमें अपनी सुरता को हर पल मूल-मिलावे में लगाना है ताकि जब हमारी सुरता इस खेल में हटे तो हम श्री राज जी के चरणों में जाग्रत हों।



Nijanand App

सुपन उड़े जब मोमिनों, उठ बैठे अर्स वजूद।
कहे खास बंदे दरगाही रूहे, कदमों हमेशा मौजूद।।

जब परमधाम में खासलखास रूहों के मालिक हक श्री अक्षरातीत है, तो रूहें नासूत में आकर भी श्री राज जी, अक्षरातीत के बिना किसी ओर की बन्दगी नहीं करेगी। मारफत में एक श्री राज जी और स्वलीला अद्वैत में श्यामा जी और रूहे लीला के लिए हैं। पूरा परमधाम और वहाँ की सारी कायनात सब उनसे ही है। जब इस दुनियां में स्वयं धनी श्यामा जी के साथ देवचन्द्र जी के तन में आये तो उन्होने अपनी रूहों को श्री राजी के चरणों में ही सिजदा करवाया।

सिजदा कराया इमामें, ऊपर हक कदम।
ए आसिक रूहें सिजदा, करे खासलखास दम।।

इसी तरह स्वामी जी के तन में अष्ट पोहोर की लीला वाणी से उस अखण्ड घर की पहचान दी है, यदि हमे वहाँ के एक पल के सुख का भी अनुभव हो जाए तो हमारा जीवन धन्य-धन्य हो जाए। अतः वाणी में बताये अनुसार उस अखण्ड स्वरूप और इश्क को पाने के लिये वाणी में बताये अनुसार ही हमें वहाँ की अखण्ड लीला का आनन्द चितवन द्वारा अपने उस आनन्द में ही मगन होना है, सहीं मायनों मे यही हमारी जागनी है क्योकि

एही अपनी जागनी, जो याद आवे निज सुख।
इश्क याहीं सो आवही, याही सो होइये सनमुख।।

श्री इन्द्रावती जी फरमा रहे है कि वहाँ के ऐसे अखण्ड सुख है कि एक सुख का भी वर्णन करना चाहूँ तो मेरी पूरी उम्र निकल जाये परन्तु वहाँ के सुख का वर्णन नहीं हो सकता है।

जो सुख खोलूं अर्स के, माहें मिलावे इत।
निकस जाए मेरी उमर कह न सकूं खिन की सिफत।। परिक्रमा प्र८चौ८

प्यारे सुन्दरसाथ जी जब अपने घर के ऐसे अखण्ड सुख है, तो व्यर्थ में इधर-उधर भटकने की बजाय हर पल परमधाम के उस आनन्द में मगन रहे धनी तो हमारे लिए वाणी में खजाने पर खजाने खोल रहे हैं तो क्यों न हम मूल-मिलावे में श्री युगल स्वरूप के चरणों में अपने चित्त को लगायें ताकि कोई भी हमें इधर-उधर भटका न सके। हम इस इलम-लदुन्नी द्वारा बताये मार्ग पर चलकर अपनी मंजिल को प्राप्त करें।

हक हुकम हादी चलावते, क्यो न लीजे अर्स राह।
मूल सरूप ले दिल में उड़ाए दीजे अरवाह।। छोटा क्यामतनामा प्र.चौ.०६

"प्रणाम जी"

चरणरज-श्रीमती कंचन आहुजा, जयपुर



Nijanand App